समकालीन हिन्दी साहित्य --- किन्नर विमर्श

डॉ चिलुका पुष्पलता.
(DR. CHILUKA PUSPHALATA)
DEPARTMENT OF HINDI
MOUNT CARMEL DEGREE COLLEGE AUTONOMOUS
58 , PALACE ROAD ,BANGALORE -560052

भूमिका

किस देश में यह तुमने मुझे डाल बनाकर है भेजा , जहा न मेरी कोई पहचान है और न कोई वजूद ,हर किसी डाल पर फूल और पत्ते अपने सुन्दरता एव्म महत्व को प्रस्तुत कर पाते है लेकिन मैं कॉन हो मैं खुद नही जानती , तॉ मेरी पहचान क्या है ? यह सावल आज भी है मेरे मन मैं ?

इनके आधे अधूरे पन की वजह से भले ही समाज इन्हें अपना अंग मानने से इंकार करता रहे, मगर वास्तविकता यही है कि ये समाज के अंग है। अंधे, कोढ़ी और अपंग लोगों की तरह किन्नर भी लाचार है, जबकि किन्नेरों को तिरस्कार व उपेक्षा की नहीं, बल्कि प्यार और सम्मान देने की जरूरत है। किन्नर समुदाय समाज से अलग ही रहता है और इसी कारण आम लोगों में उनके जीवन और रहन-सहन को जानने की जिज्ञासा बनी रहती है। किन्नरों का वर्णन ग्रंथों में भी मिलता है।

ज्योतिष के अनुसार वीर्य की अधिकता से पुरुष (पुत्र) उतपन्न होता है। रक्त (रज) की अधिकता से स्त्री (कन्या) उतपन्न होती है। वीर्य और राज़ समान हो तो किन्नर संतान उतपन्न होती है।महाभारत में जब पांडव एक वर्ष का अज्ञात वास काट रहे थे, तब अर्जुन एक वर्ष तक किन्नर वृहन्नला बनकर रहा था। पुराने समय में भी किन्नर राजा-महाराजाओं के यहां नाचना-गाना करके अपनी जीविका चलाते थे। महाभारत में वृहन्नला (अर्जुन) ने उत्तरा को नृत्य और गायन की शिक्षा दी थी।किन्नर की दुआएं किसी भी व्यक्ति के बुरे समय को दूर कर सकती हैं। एक मान्यता है कि ब्रह्माजी की छाया से किन्नरों की उत्पत्ति हुई है। दूसरी मान्यता यह है कि अरिष्टा और कश्यप ऋषि से किन्नरों की उतपत्ति हुई है।किसी नए वयक्ति को किन्नर समाज में शामिल करने के भी नियम है। इसके लिए कई रीती-रिवाज़ है, जिनका पालन किया जाता है। नए किन्नर को शामिल करने से पहले नाच-गाना और सामूहिक भोज होता है। फिलहाल देश में किन्नरों की चार देवियां हैं। कुंडली में बुध, शनि, शुक्र और केतु के अशुभ योगों से किन्नरों के बारे में कई प्रकार की रस्मे आज भी हमारे समाज में मौजूद है, जैसे किसी किन्नर की मृत्यु के बाद उसका अंतिम संस्कार बहुत ही गुप्त तरीके से किया जाता है। किन्नरों की जब मौत होती है तो उसे किसी गैर किन्नर को नहीं दिखाया जाता। ऐसा माना जाता है कि ऐसा करने से मरने वाला अगले जन्म में भी किन्नर ही पैदा होगा। किन्नर मुर्दे को जलाते नहीं बल्कि दफनाते हैं । हिंजड़ों की शव यात्राएं रात्रि को निकाली जाती है। शव यात्रा को उठाने से पूर्व जूतों-चप्पलों से पीटा जाता है।किन्नर के मरने उपरांत पूरा हिंजड़ा समुदाय एक सप्ताह तक भूखा रहता है। किन्नर समुदाय में गुरू शिष्य जैसे प्राचीन परम्परा आज भी यथावत बनी हुई है। किन्नर समुदाय के सदस्य स्वयं को मंगल मुखी कहते है क्योंकि ये सिर्फ मांगलिक कार्यो में ही हिस्सा लेते हैं मातम में नहीं । किन्नर समाज कि सबसे बड़ी विशेषता है मरने के बाद यह मातम नहीं मनाते हैं। किन्नर समाज में मान्यता है कि मरने के बाद इस नर्क रूपी जीवन से छुटकारा मिल जाता है। इसीलिए मरने के बाद हम खुशी मानते हैं । ये लोग स्वंय के पैसो से कई दान कार्य भी करवाते है ताकि पुन: उन्हें इस रूप में पैदा ना होना पड़े। था। किन्नर अपने आराध्य देव अरावन से साल में एक बार विवाह करते है। हालांकि यह विवाह मात्र एक दिन के लिए होता है। अगले दिन अरावन देवता की मौत के साथ ही उनका वैवाहिक जीवन खत्म हो जाता है।अब सवाल यह उठता है की अरावन है कौन, किन्नर उनसे क्यों शादी रचाते है और यह शादी मात्र एक दिन के लिए ही क्यों होती है ?

अर्जुन और नाग कन्या उलुपी के पुत्र थे अरावन : महाभारत की कथा के अनुसार एक बार अर्जुन को, द्रोपदी से शादी की एक शर्त के उल्लंघन के कारण इंद्रप्रस्थ से निष्कासित करके एक साल की तीर्थयात्रा पर भेजा जाता है। वहाँ से निकलने के बाद अर्जुन उत्तर पूर्व भारत में जाते है जहाँ की उनकी मुलाक़ात एक विधवा नाग राजकुमारी उलूपी से

होती है। दोनों को एक दूसरे से प्यार हो जाता है और दोनों विवाह कर लेते है। विवाह के कुछ समय पश्चात, उलूपी एक पुत्र को जन्म देती है जिसका नाम अरावन रखा जाता है। पुत्र जन्म के पश्चात अर्जुन, उन दोनों को वही छोड़कर अपनी आगे की यात्रा पर निकल जाता है। अरावन नागलोक में अपनी माँ के साथ ही रहता है। युवा होने पर वो नागलोक छोड़कर अपने पिता के पास आता है। तब कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध चल रहा होता है इसलिए अर्जुन उसे युद्ध करने के लिए रणभूमि में भेज देता है।

महाभारत युद्ध में दी थी स्वयं की बलि : महाभारत युद्ध में एक समय ऐसा आता है जब पांडवो को अपनी जीत के लिए माँ काली के चरणो में स्वेचिछ्क नर बलि हेतु एक राजकुमार की जरुरत पड़ती है। जब कोई भी राजकुमार आगे नहीं आता है तो अरावन खुद को स्वेचिछ्क नर बलि हेतु प्रस्तुत करता है लेकिन वो शर्त रखता है की वो अविवाहित नहीं मरेगा। इस शर्त के कारण बड़ा संकट उत्पन हो जाता है क्योकि कोई भी राजा, यह जानते हुए की अगले दिन उसकी बेटी विधवा हो जायेगी, अरावन से अपनी बेटी की शादी के लिए तैयार नहीं होता है। जब कोई रास्ता नहीं बचता है तो भगवान श्री कृष्ण स्वंय को मोहिनी रूप में बदलकर अरावन से शादी करते है। अगले दिन अरावन स्वंय अपने हाथो से अपना शीश माँ काली के चरणो में अर्पित करता है। अरावन की मृत्यु के पश्चात श्री कृष्ण उसी मोहिनी रूप में काफी देर तक उसकी मृत्यु का विलाप भी करते है। अब चुकी श्री कृष्ण पुरुष होते हुए स्त्री रूप में अरावन से शादी रचाते है इसलिए किन्नर, जो की स्त्री रूप में पुरुष माने जाते है, वे भी अरावन से एक रात की शादी रचाते है और उन्हें अपना आराध्य देव मानते है।

अर्जुन और नाग कन्या उलुपी के पुत्र थे अरावन : महाभारत की कथा के अनुसार एक बार अर्जुन को, द्रोपदी से शादी की एक शर्त के उल्लंघन के कारण इंद्रप्रस्थ से निष्कासित करके एक साल की तीर्थयात्रा पर भेजा जाता है। वहाँ से निकलने के बाद अर्जुन उत्तर पूर्व भारत में जाते है जहाँ की उनकी मुलाक़ात एक विधवा नाग राजकुमारी उलूपी से होती है। दोनों को एक दूसरे से प्यार हो जाता है और दोनों विवाह कर लेते है। विवाह के कुछ समय पश्चात, उलूपी एक पुत्र को जन्म देती है जिसका नाम अरावन रखा जाता है। पुत्र जन्म के पश्चात अर्जुन, उन दोनों को वही छोड़कर अपनी आगे की यात्रा पर निकल जाता है। अरावन नागलोक में अपनी माँ के साथ ही रहता है। युवा होने पर वो नागलोक छोड़कर अपने पिता के पास आता है। तब कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध चल रहा होता है इसलिए अर्जुन उसे युद्ध करने के लिए रणभूमि में भेज देता है।

कूवगम (तमिलनाडु) में है भगवान अरावन का मंदिर : हमारे देश भारत के तमिलनाडु राज्य में देवता अरावन की पूजा की जाती है। कई जगह इन्हे इरावन (Iravan) के नाम से भी जाना जाता है। अरावन, हिंजड़ो के देवता है इसलिए दक्षिण भारत में हिंजड़ो को अरावनी कहा जाता है। वैसे तो अब तमिलनाडु के कई हिस्सों में भगवान अरावन के मंदिर बन चुके है पर इनका सबसे प्राचीन और मुख्य मंदिर विल्लुपुरम जिले के कूवगम गाँव में है जो की Koothandavar Temple के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर में भगवान अरावन के केवल शीश की पूजा की जाती है ठीक वैसे ही जैसे की राजस्थान के खाटूश्यामजी में बर्बरीक के शीश की पूजा की जाती है।

गुरू शिष्य की परंपरा और किन्नर ? - हमारे समुदाय में गुरू शिष्य जैसे प्राचीन परम्परा आज भी यथावत बनी हुई है। किन्नर समुदाय के सदस्य स्वयं को मंगल मुखी कहते है क्योंकि ये सिर्फ मांगलिक कार्यो में ही हिस्सा लेते हैं मातम में नहीं । हमारे समाज कि सबसे बड़ी विशेषता है मरने के बाद हम मातम नहीं मानते हैं। हमारे समाज में मान्यता है कि मरने के बाद इस नर्क रूपी जीवन से छुटकारा मिल जाता है। इसीलिए मरने के बाद हम खुशी मानते हैं । ये लोग स्वंय के पैसो से कई दान कार्य भी करवा है ते ताकि पुन: उन्हें इस रूप में पैदा ना होना पड़े। लेकिन यह एक विडंबना है कि सामाजिक विधिक संदर्भ में व्यक्ति की परिभाषा में केवल पुरूष व स्त्री को ही शामिल किया जाता रहा है।

किन्नर की संतान ? - ये उनका लालन-पालन बड़े अच्छे ढंग से करते हैं। जहां तक एक से बच्चे को बिरादरी में सम्मिलित करने की बात है तो बनी प्रथा के अनुसार बालिग होने पर ही रीति संस्कार द्वारा किसी को बिरादरी में शामिल किया जाता है।

रीती, रिवाज़ और किन्नर ; रीति संस्कार से एक दिन पूर्व नाच गाना होता है तथा सभी का खाना एक ही चुल्हे पर बनता है। अगले दिन जिसे किन्नदर बनना होता है, उसे नहला-धुलाकर अगरबत्ती और इत्र की सुगंध के साथ तिलक किया जाता है।

किन्नरों का विकास ? - तमिलनाडु में किन्नरों के विकास के लिए सरकार द्वारा एक बोर्ड का भी गठन किया गया है। वास्तव में इनकी बातों में एक पीड़ा है जिसके अहसास से हमारा समाज कोशों दूर है। देश की आजादी को 64 साल बीत गए हैं, लेकिन आज भी हमारे समाज का एक तबका आजादी के बाद मिले कई अधिकारों से वंचित है।

महाभारत -पौराणिक काल मे किन्नर ; - पौराणिक काल के काफी बाद महाभारत काल में भी अपने अज्ञातवास में अर्जुन का वृहन्नला का रूप धरना भी यही साबित करता है कि उभयलेंगिकों के लिए समाज में पर्याप्त स्थान था। महाभारत का ही शिखंडी जो नारी रूप में पैदा हुआ लेकिन एक पुरुष के रूप में पला और बढ़ा। परंतु आज समाजिक विभेद के कारण ये समाज अपने पक्ष से भटक रहा है। आवश्यकता है एक पहल की ताकी इन्हें भी समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके।

शिखंडी ; - शिखंडी महाभारत की कथा का वो पात्र है जो भीष्म पितामह की मृत्यु का कारण बनता है। शिखंडी पूर्वजन्म में स्त्री होता है, इस जन्म में भी वो स्त्री रूप में पैदा होता है लेकिन युवा होकर पुरुष बन जाता है। स्त्री के रूप में जन्म लेकर शिखंडी पुरुष कैसे बना और क्यों बना, इसकी कथा इस प्रकार है- जब कौरवों व पांडवों में युद्ध होना निश्चित हो गया और दोनों पक्षों की सेना कुरुक्षेत्र में एकत्रित हो गई तब दुर्योधन ने भीष्म पितामह से पांडवों के प्रमुख योद्धाओं के बारे में पूछा। तब भीष्म पितामह ने पांडवों के प्रमुख योद्धाओं के बारे में विस्तार पूर्वक दुर्योधन को बताया। साथ में यह भी बताया कि वे राजा द्रुपद के पुत्र शिखंडी से युद्ध नहीं करेंगे। दुर्योधन ने इसका कारण पूछा। तब भीष्म पितामह ने बताया कि शिखंडी पूर्व जन्म में एक स्त्री था। साथ ही वह इस जन्म में भी कन्या के रूप में जन्मा था, लेकिन बाद में वह पुरुष बन गया। भीष्म ने कहा कि कन्या रूप में जन्म लेने के कारण मैं उसके साथ युद्ध नहीं करूंगा। शिखंडी स्त्री से पुरुष कैसे बना, यह विचित्र कथा भी भीष्म पितामह ने दुर्योधन को बताई। जिस समय हस्तिनापुर के राजा मेरे छोटे भाई विचित्रवीर्य थे। उस समय उनके विवाह के लिए मैं भरी सभा से काशीराज की तीन पुत्रियों अंबा, अंबिका और अंबालिका को हर लाया था, लेकिन जब मुझे पता चला कि अंबा के मन में राजा शाल्व के प्रति प्रेम है तो मैंने उसे ससम्मान राजा शाल्व के पास भेज दिया परंतु राजा शाल्व ने अंबा को अपनाने से इंकार कर दिया। अंबा को लगा कि उस पर यह विपत्ति मेरे ही कारण आई है। इसलिए उसने मुझसे बदला लेने का संकल्प लिया। यह बात जब अंबा के नाना राजर्षि होत्रवाहन को पता चली तो उन्होंने अंबा को परशुरामजी से मिलने के लिए कहा। परशुरामजी से मिलकर अंबा ने अपनी पूरी व्यथा उन्हें बता दी। अंबा की बात सुनकर गुरु परशुराम मेरे पास आए और उन्होंने मुझे अंबा के साथ विवाह करने के लिए कहा, लेकिन मैंने ऐसा करने से मना कर दिया। तो मेरे गुरु परशुराम को मुझ पर बहुत क्रोध आया और उन्होंने मुझसे युद्ध करने की ठान ली। गुरु परशुराम और मेरे बीच लगातार 23 दिन तक युद्ध होता रहा, लेकिन इसका कोई परिणाम नहीं निकला। 24 वे दिन जब मैंने महाभयंकर प्रस्वापास्त्र अस्त्र का प्रहार परशुरामजी पर करना चाहा तो आकाश में उपस्थित नारद मुनि ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया। तब मैंने वह अस्त्र अपने धनुष पर से उतार लिया। यह देख परशुरामजी ने मुझसे कहा कि भीष्म तुमने मुझे परास्त कर दिया। तभी वहां गुरु परशुरामजी के पितरगण उपस्थित हो गए और उनके कहने पर उन्होंने अपने अस्त्र रख दिए। इस प्रकार वह युद्ध समाप्त हो गया। तब अंबा मेरे नाश के लिए तप करने के लिए वहां से चली गई। अंबा यमुना तट पर रहकर तप करने लगी। तप करते-करते उसने अपना शरीर त्याग दिया। अगले जन्म में वह वत्सदेश के राजा की कन्या होकर उत्पन्न हुई। वह अपने पूर्वजन्म के बारे में जानती थी। इसलिए मुझसे बदला लेने के लिए वह पुन: तप करने लगी। उसके तप से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उसे दर्शन दिए। उस कन्या ने भगवान शिव से मेरी पराजय का वरदान मांगा। भगवान शिव ने उसे मनचाहा वरदान दे दिया। तब उस कन्या ने कहा कि मैं एक स्त्री होकर भीष्म का वध कैसे कर सकूंगी? तब भगवान शिव ने उससे कहा कि तू अगले जन्म में पुन: एक स्त्री के रूप में जन्म लेगी, लेकिन युवा होने पर तू पुरुष बन जाएगी और भीष्म की मृत्यु का कारण बनेगी। ऐसा वरदान मिलने पर उस कन्या ने एक चिता बनाई और मैं भीष्म का वध करने के लिए अग्नि में प्रवेश करती हूं, ऐसा कहकर उसमें प्रवेश कर गई।वही अंबा इस जन्म में शिखंडी के रूप में जन्मी है। जब राजा

द्रुपद को कोई संतान नहीं थी, तब उसने महादेव को प्रसन्न कर पुत्र होने का वरदान मांगा। महादेव ने उससे कहा कि तुम्हारे यहां एक कन्या का जन्म होगा, जो बाद में पुरुष बन जाएगी। बाद मे स्थूणाकर्ण नाम का एक यक्ष ने शिखंडी की सहायता करने के उद्देश्य से अपना पुरुषत्व उसे दे दिया और उसका स्त्रीत्व स्वयं धारण कर लिया।

अर्जुन (बृहन्नला) ; - एक दिन जब चित्रसेन अर्जुन को संगीत और नृत्य की शिक्षा दे रहे थे, वहाँ पर इन्द्र की अप्सरा उर्वशी आई और अर्जुन पर मोहित हो गई। अवसर पाकर उर्वशी ने अर्जुन से कहा, "हे अर्जुन! आपको देखकर मेरी काम-वासना जागृत हो गई है, अतः आप कृपया मेरे साथ विहार करके मेरी काम-वासना को शांत करें।" उर्वशी के वचन सुनकर अर्जुन बोले, "हे देवि! हमारे पूर्वज ने आपसे विवाह करके हमारे वंश का गौरव बढ़ाया था अतः पुरु वंश की जननी होने के नाते आप हमारी माता के तुल्य हैं। देवि! मैं आपको प्रणाम करता हूँ।" अर्जुन की बातों से उर्वशी के मन में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ और उसने अर्जुन से कहा, "तुमने नपुंसकों जैसे वचन कहे हैं, अतः मैं तुम्हें शाप देती हूँ कि तुम एक वर्ष तक पुंसत्वहीन रहोगे।" इतना कहकर उर्वशी वहाँ से चली गई। जब इन्द्र को इस घटना के विषय में ज्ञात हुआ तो वे अर्जुन से बोले, "वत्स! तुमने जो व्यवहार किया है, वह तुम्हारे योग्य ही था। उर्वशी का यह शाप भी भगवान की इच्छा थी, यह शाप तुम्हारे अज्ञातवास के समय काम आयेगा। अपने एक वर्ष के अज्ञातवास के समय ही तुम पुंसत्वहीन रहोगे और अज्ञातवास पूर्ण होने पर तुम्हें पुनः पुंसत्व की प्राप्ति हो जायेगी।" इस शाप के कारण ही अर्जुन एक वर्ष के अज्ञात वास के दौरान बृहन्नला बने थे। इस बृहन्नला के रूप में अर्जुन ने उत्तरा को एक वर्ष नृत्य सिखाया था। उत्तरा विराट नगर के राजा विराट की पुत्री थी।

देश में हर साल किन्नरों की संख्या में 40-50 हजार की वृद्धि होती है। देशभर के तमाम किन्नरों में से 90 फीसद ऐसे होते हैं जिन्हें बनाया जाता है। समय के साथ किन्नर बिरादरी में वो लोग भी शामिल होते चले गए जो जनाना भाव रखते हैं। किन्नरों की दुनिया का एक खौफनाक सच यह भी है कि यह समाज ऐसे लड़कों की तलाश में रहता है जो खूबसूरत हो, जिसकी चाल-ढाल थोड़ी कोमल हो और जो ऊंचा उठने के ख्वाब देखता हो। यह समुदाय उससे नजदीकी बढ़ाता है और फिर समय आते ही उसे बधिया कर दिया जाता है। बधिया, यानी उसके शरीर के हिस्से के उस अंग को काट देना, जिसके बाद वह कभी लड़का नहीं रहता। अब देश में मौजूद पचास लाख से भी ज्यादा किन्नरों को तीसरे दर्जे में शामिल कर लिया गया है। अपने इस हक के लिए किन्नर बिरादरी वर्षों से लड़ाई लड़ रही थी। 1871 से पहले तक भारत में किन्नरों को ट्रांसजेंडर का अधिकार मिला हुआ था। मगर 1871 में अंग्रेजों ने किन्नरों को क्रिमिनल ट्राइब्स यानी जरायमपेशा जनजाति की श्रेणी में डाल दिया था। बाद में आजाद हिंदुस्तान का जब नया संविधान बना तो 1951 में किन्नरों को क्रिमिनल ट्राइब्स से निकाल दिया गया। मगर उन्हें उनका हक तब भी नहीं मिला था।

अक्काइ पद्ममाश्री ; - ये भारत देश की पहली किन्न्र स्त्री हे जो राज्य के सर्वोच्च नागरिक के रुप में इन्हें कर्नाटक राज्योतस्व पुरस्कार प्राधान किया गया हे । इन्होने बारा साल की उमर मे से ही काफी सम्स्यओ का सामना किया । इन्होने फिर चार साल तक गुप्त श्रमिको (योन कर्मियो) के रुप मे भी कार्य किया आखो मे आसु ले कर , केवल यहि नहीं इन्हे स्थानीय ट्ग़ ओर पुलिसवालो ने काफ़ी परेशन तथा उल्ल्घ्न किया। 2004 मे अक्काई जी ने एन जी वो सगम मे प्रवेश किया । बाद मे हिन्होने सम्पुर्ण रूप से अपना लिग बदलने के लिए चिकित्सा प्राक्रियाओ के परामर्श के हेतु वे निमान्स हस्पताल मे आधिकारिक लिग परिवर्तन के लिए कागाजी कार्रवाई की ओर 2012 मे पूरा सेक्स पूनर्मूल्याकन सर्जरी से गुजरी । 2012 मे अल्तामाज कबीर मुख्य न्यायाधीश के सम्क्श न्यायातत्र के अन्तर्गत किन्नर सम्बन्धी स्मस्याओ के मुधे को उटाने की शपथ ग्रहण कीया ताकी वे उन्की लडाई न्यायातत्र के अन्तर्गत ही लड्सके ।फ़िर खुद एक स्गट्न (उनटिड अभिसरन कर्नाटका) का प्रारम्भ किया जिस के अन्तर्गत किन्नर जगरुक्ता एवं (लेगिक्ता)योन विविधता चुनाने का अधिकार प्राप्त हे । हिन्होंने 2017 /20 जनवरी मे वसूदेव वी नामक पुरुश से विवाह किया ।

अक्काई की तरहा ओर भी हे जेसे ; - 1 रुद्रारानी चेत्री 2 कलकी सूब्रामाणीयं 3 पदमानी प्राकाश
4 मधु माणाभी भान्दोउप्दयाय आदि ।

निष्कर्ष : किन्नर का जीवन कियो इतना कष्टदायक माना जाता है या बनाया जाता है, जबकि वह भी एक साधारण मानव है, फिर समाज कियाे इन्हे समाज से अलग मान कर उन्हें प्राताडित करता है और यह कियाे भूल

जाते है, असल में हमें इन्हे मनोवैज्ञानिक परामर्श के तहत यह समझाना चाहिए की वो भी साधारण मानव है और उसे पूरा अधिकार है की वह अपना जीवन दूसरे कें समान जीए न की अपने को समाज सें अलग मानकर जीए |

संदर्भ - ग्रन्थ – सूची

क्रम. सं.	लेखक	पुस्तक	संस्करण	प्रकाशन
1	राजेन्द्र शर्म	माहभारत	1977	36- सी कनाट प्लेस, व्दारा प्रकाशित नई दिल्ली – 110001
2	बुद्धदेव बसु	महाभारत की कथा	प्रकाशित वर्ष	प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ : 2004 आईएसबीएन : 8126310839 मुखपृष्ठ : सजिल्द पृष्ठ:196 पुस्तक क्रमांक : 110